डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी

काम,क्रोध,मद,मोह तजो मन,खुल जाये सब द्वार।
नश्वर काया मदमाती क्यों, जाना तो उस पार।

स्वयं रात दिन रोदन करता,अपने पन का मोह ।
कुटिल निरंकुश अज्ञानी जो,गिरे स्वयं ही खोह।
घूमे मन अज्ञान तिमिर में,कटे न पल दो चार,
नश्वर काया मदमाती क्यों, जाना तो उस पार।

छलकाती यौवन मधुशाला,केवल माया जाल ।
नेह देह बस भ्रांतिमूल है,ओढ़े पशु की खाल ।
संचारी हिय भाव गमन से, उपमा जाती हार,
नश्वर काया मदमाती क्यों, जाना तो उस पार।

ढूँढ रही हैं 'लता' प्रेम की, धूप सुहानी छाँव ।
मिल जाये गति अपने अंतर,वही बसाए गाँव ।
बीच भँवर से तरणी उबरे, डूबे मन पतवार,
नश्वर काया मदमाती क्यों,जाना तो उस पार।

एक दीप यदि राष्ट्र-नाम हो
जगमग होगी शाम हमारी, दीप जलें यदि घर-घर आली।

एक दीप यदि राष्ट्र-नाम हो, भर देगा चहुँदिक खुशहाली।।

ड्योढ़ी सबकी जगमग करना,
स्नेह ; दीप में नित ही भरना।
आलोकित हो कोना कोना,
बढ़ी अमावस उसको हरना।
खुशियाँ यह निस्वार्थ भाव की, सज जाये दीपों से थाली।
एक दीप यदि राष्ट्र नाम हो, भर देगा चहुँदिक खुशहाली।।

चकाचौंध में खो मत जाना,
दीप - दीप से दीप जलाना।
हृदय लिए संकल्प किसी को,
भूखे पथ पर नहीं सुलाना।
दीप-पर्व अभिराम सुखद हर, शाम मनेगी यह दीवाली।
एक दीप यदि राष्ट्र नाम हो, भर देगा चहुँदिक खुशहाली।।

मद में डूबी हो तरुणाई,
द्यूतक्रीड़ा खोदे न खाई।
चिंतनीय यह अर्थ कामना,
बदअमली यह कथित बुराई।
छद्म नहीं यह गली धाम हो, मुँहकी खायें सभी कुचाली
एक दीप यदि राष्ट्र नाम हो, भर देगा चहुँदिक खुशहाली।।

ISSN:2583-8849